अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं – जैन धर्म भूषण (परीक्षा 17 जुलाई, 2022)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) दशवैकालिक सूत्र के चतुर्थ अध्ययन का दूसरा नाम है-
(क) समिति-गुप्ति (ख) धर्म प्रज्ञप्ति
(ग) विनय (घ) क्षुल्लकाचार (ख)

(b) संसार के सभी जीवों को कितने विभागों में विभक्त किया गया है-
(क) 3 (ख) 4
(ग) 5 (घ) 6 (घ)

(c) वनस्पति के कितने प्रकार हैं-
(क) 2 (ख) 3
(ग) 4 (घ) 5 (ख)

(d) ''अइवाइज्जा'' का अर्थ है-
(क) अतिपात (ख) प्राणातिपात
(ग) अणुव्रत (घ) विरमणव्रत (क)

(e) ''विलिहिज्जा'' का अर्थ है-
(क) श्लाका समूह (ख) भेदन
(ग) लोहमय श्लाका (घ) विशेष रेखा (घ)

(f) लघुदण्डक में बीसवाँ द्वार है -
(क) अज्ञान (ख) उत्पाद
(ग) आहार (घ) उपयोग (ख)

(g) चौथी नारकी की अवगाहना है-
(क) 250 धनुष (ख) 125 धनुष
(ग) 62.5 धनुष (घ) 31.25 धनुष (ग)

(h) चन्द्र विमान वाली देवों की उत्कृष्ट स्थिति है-
(क) 1 पल्योपम 2 लाख वर्ष (ख) 1 पल्योपम 1 लाख वर्ष
(ग) आधा पल्योपम 50 हजार वर्ष (घ) पाव पल्योपम (ख)

(i) वायु काय की उत्कृष्ट स्थिति है-
(क) 7 हजार वर्ष (ख) 10 हजार वर्ष
(ग) 3 हजार वर्ष (घ) 22 हजार वर्ष (ग)

(j) चौरेन्द्रिय में कितने प्राण पाये जाते हैं -
(क) 6 (ख) 7
(ग) 8 (घ) 5 (ग)

(k) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में कितने योग पाये जाते हैं-
(क) 9 (ख) 10
(ग) 12 (घ) 13 (घ)

(l) वह क्रोध जिसे तालाब की दरार से उपमित किया है-
(क) संज्वलन (ख) प्रत्याख्यानी
(ग) अप्रत्याख्यानी (घ) अनन्तानुबंधी (ग)

(m) अचरम में गुणस्थान हैं-
(क) पहला (ख) 1 से 14
(ग) 1 से 3 (घ) 4 से 14 (क)

(n) जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए अति आवश्यक है-
(क) मान (ख) सहिष्णुता
(ग) पुरुषार्थ (घ) यश (ग)

(o) वलयाकार पवर्तों में कौनसा पर्वत श्रेष्ठ है-
(क) रुचक (ख) मेरु
(ग) सुदर्शन (घ) सुमेक (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1 = (15)**

(a) पृथ्वीकाय के जीवों की हिंसा को अहितकर व अशुभ नहीं माना है। (नहीं)

(b) यतना से बैठने वाला साधु त्रस-स्थावर जीवों की हिंसा करता है। (नहीं)

(c) संयम का पालन करने के लिए जीव-अजीव का ज्ञान आवश्यक है। (हाँ)

(d) ज्ञान प्राप्ति का मुख्य साधन स्वाध्याय है। (नहीं)

(e) लोकान्तिक देवों में तीनों ही दृष्टियाँ पाई जाती हैं। (हाँ)

(f) नारकी और देवों में जन्म से ही अवधि ज्ञान होता है। (हाँ)

(g) तीसरे ग्रेवैयक की जघन्य स्थिति 25 सागरोपम है। (नहीं)

(h) असन्नी मनुष्य की उत्कृष्ट अवगाहना अंगुल के संख्यातवें भाग है। (नहीं)

(i) 30 अकर्मभूमि मनुष्यों में 6 उपयोग पाये जाते हैं। (हाँ)

(j) तीसरे आरे के आरम्भ में गर्भज मनुष्य की अवगाहना दो गाउ होती है। (नहीं)

(k) युगलिक मनुष्य में प्रथम चार लेश्याएँ पाई जाती हैं। (हाँ)

(l) क्रोध से प्रीति का नाश होता है। (हाँ)

(m) सुमेरु पर्वत में सबसे ऊपर नन्दन वन है। (नहीं)

(n) तीर्थंकर चरित्र में भगवान ऋषभदेव के 13 भवों का वर्णन है। (हाँ)

(o) ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की आराधना के सात भव (मनुष्य सम्बन्धी) ही होते हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1 = (15)**

(a)	समणेणं	(क) प्रत्येक गाऊ	भगवान महावीर
(b)	तनवात	(ख) तीन गाऊ	वायुकाय
(c)	पर्वबीज	(ग) शक्ति	वनस्पतिकाय
(d)	नक्षत्र	(घ) 6 माह	ज्योतिष
(e)	देवलोक	(च) माया	परिगृहीता
(f)	असन्नी खेचर की अवगाहना	(छ) 15 भव	प्रत्येक धनुष
(g)	भुजपरिसर्प की अवगाहना	(ज) वनस्पतिकाय	प्रत्येक गाऊ
(h)	देवकुरु-उत्तरकुरु की अवगाहना	(झ) अभय	तीन गाऊ
(i)	भावप्राण	(य) परिगृहीता	शक्ति
(j)	चौरेन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति	(र) सलिंगी सम्यग्दृष्टि	6 माह
(k)	स्त्रीवेद	(ल) प्रत्येक धनुष	माया
(l)	लाभ	(व) भगवान महावीर	लोभ
(m)	आराधक	(क्ष) ज्योतिष	15 भव
(n)	दोनों में श्रेष्ठ	(त्र) लोभ	अभय
(o)	छठा, सातवाँ गुणस्थान	(ज्ञ) वायुकाय	सलिंगी सम्यग्दृष्टि

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a)	आघात, टक्कर और अग्नि आदि मेरे शस्त्र हैं।	वायुकाय
(b)	महाव्रती होने से मैं पूर्ण अहिंसक हूँ।	जैन मुनि
(c)	मैं सभी सभाओं में श्रेष्ठ हूँ।	सुधर्मा सभा
(d)	मेरी उत्कृष्ट स्थिति एक सागरोपम झाझेरी है।	बलीन्द्र जी
(e)	मेरे कुल 288 भेद हैं।	आहार
(f)	मेरी जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति 8 सागरोपम है।	लोकान्तिक
(g)	मैं लघुदण्डक का 15वाँ भेद (द्वार) हूँ।	ज्ञान
(h)	मुझमें 10 दण्डक पाये जाते हैं।	औदारिक शरीर
(i)	मैं मरकर तिर्यंच गति में ही जाता हूँ।	7वीं नारकी/तेउकाय/वायुकाय
(j)	मैं स्वाध्याय के रूप में गुनगुनाई जाती हूँ।	वीर-स्तुति
(k)	मैं पताका के रूप में शोभायमान हूँ।	पण्डक वन
(l)	मैं ऐसा पर्वत हूँ, जिसकी सूर्य आदि ज्योतिषी विमान परिक्रमा करते हैं।	सुमेरु पर्वत
(m)	मैं सभी तारों में प्रधान तारा हूँ।	चन्द्रमा
(n)	मैं वैमानिक का आयुष्य बांधता हूँ।	सम्यग्दृष्टि/क्रियावादी
(o)	मैं देवताओं के आनन्ददायक क्रीड़ा स्थल का श्रेष्ठ वृक्ष हूँ।	शाल्मली

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2 = (16)**

(a) सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं।

उ. उभय पि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे।। गाथा का अर्थ लिखिए।

ज्ञान प्राप्ति का मुख्य साधन सुनना है। पुण्य और पाप का ज्ञान शास्त्र सुनने से ही होता है। ज्ञानी शास्त्र सुनकर ही पुण्य-पाप का ज्ञान प्राप्त करता है और श्रेय मार्ग को स्वीकार करता है।

(b) निम्न गाथा को पूर्ण कीजिए-

उ. जया.....नीरओ।।

जया जोगे निरूंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ।
तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ।।

(c) निम्न गाथा को पूर्ण कीजिए-

उ. तवो गुण.....तारिस गस्स।।

तवोगुणपहाणस्स उज्जुमइ, खंतिसंजमरयस्स।
परीसहे जिणंतस्स 'सुलहा सुगई' तारिसगस्स।।

(d) युगलिक मनुष्य के भेद लिखिए।

उ. युगलिक मनुष्यों के भेद- 5 हेमवत, 5 ऐरण्यवत, 5 हरिवास, 5 रम्यक्वास, 5 देवकुरु, 5 उत्तरकुरु और 56 अन्तर्द्वीपज, ये कुल 86 भेद।

(e) तीसरा आरा पूर्ण होते एवं चौथे आरे के प्रारम्भ से लेकर छठे आरे के उतरने तक गर्भज मनुष्य की अवगाहना लिखिए।

उ.

तीसरा पूर्ण होते और चौथे के आरम्भ में	पाँच सौ धनुष
चौथा उतरते और पाँचवाँ लगते	सात हाथ
पाँचवाँ उतरते और छठा लगते	दो हाथ
छठा आरा उतरते	एक हाथ

(f) निम्न की जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति लिखिए-

उ.	जघन्य	उत्कृष्ट
1. अप्काय-	अन्तर्मुहूर्त	7 हजार वर्ष की।
2. वनस्पतिकाय	अन्तर्मुहूर्त	10 हजार वर्ष की।
3.तेइन्द्रिय	अन्तर्मुहूर्त	49 अहोरात्रि
4.सन्नी पंचेन्द्रिय खेचर	अन्तर्मुहूर्त	पल्योपम के असंख्यातवें भाग।

(g) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए-

उ.			
सलिलाण	नदियों में	साइमणंत	सादि-अनन्त
अच्चिमाली	सूर्य	पव्वदुग्गे	पर्वत मेखलाओं से दुर्लभ

(h) लोक-परलोक के स्वरूप को जानकर भगवान महावीर ने कौनसे पापों का त्याग कर दिया था ?

उ. स्त्री भोग और रात्रि भोजन छोड़ दिया था तथा सब प्रकार के पापों को सर्वथा त्याग दिया था।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3 = (24)**

(a) निम्न गाथाओं के शब्दों का अर्थ लिखते हुए भावार्थ लिखिए-
तेऊ चित्तमंतमक्खाया अणेगजीवा।
पुढ़ोसत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं।।

उ. तेऊ- अग्निकाय। चित्तमंतमक्खाया- चेतना वाली कही गई है, उसमें। अणेगजीवा- अनेक जीव। पुढोसत्ता- पृथक् सत्ता वाले हैं। सत्थ परिणएणं- शस्त्र परिणत के। अन्नत्थ- अतिरिक्त वे अग्निकाय भी सजीव हैं।

भावार्थ- तेजस्काय-अग्नि को चेतनायुक्त कहा गया है। उल्का, अंगार, ज्वाला और विद्युत् आदि सब प्रकार की अग्नि सजीव है। अंगार के सूक्ष्म कण में भी असंख्य जीव हैं। अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण शरीर वाले ये सब जीव अलग-अलग सत्ता वाले हैं। पानी, मिट्टी आदि विरोधी तत्त्वों से परिणत को छोड़कर शेष अग्नि भी चेतनावान् है।

(b) अजयं चरमाणो य, पाण भूयाइं हिंसइं।

उ. बंधइ पावयं कम्मं, तं से होड कडुयं फलं।।

अजयं- अयतनापूर्वक। चरमाणो य- चलता हुआ, संयमी। पाणभूयाइं हिंसइ- प्राणभूत की अर्थात् छोटे-बड़े जीवों की हिंसा करता है। बंधइ पावयं कम्मं- इससे पाप-कर्म का बन्ध करता है। तं से- वह पाप-कर्म उस प्राणी के लिये। कडुयं फलं होइ- कटुक फल देने वाला होता है।

भावार्थ- अयतना से चलने वाला साधु त्रस-स्थावर जीवों की हिंसा करता हैं, क्योंकि जब साधक अगल-बगल में देखते और बात करते हुए चलता है, तब आगे भूमि पर बराबर ध्यान नहीं रहता, परिणामस्वरूप आने वालों से टकरा जाना, ठोकर खाना और जीव-जन्तु पर पैर पड़ना भी सम्भव है। चलने में पूरा ध्यान नहीं रखना ही अयतना है। अयतना से चलने पर विकलेन्द्रिय-कीट पतंगादि प्राण और भूत-वनस्पति आदि स्थावर एवं त्रस जीवों की हिंसा होती है। हिंसा के कारण पाप-कर्म का बन्ध होता है और वह कटु फल देने वाला होता है।

कक्षा : आठवीं – जैन धर्म भूषण (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) टक्कर शस्त्र है-
(क) पृथ्वीकाय का (ख) अप्काय का
(ग) वायुकाय का (घ) वनस्पतिकाय का (ग)

(b) खटमल जीव है-
(क) अण्डज (ख) सम्मूर्च्छिम
(ग) रसज (घ) स्वेदज (ख)

(c) साधक द्रव्य और भाव से मुण्डित होकर अणगार वृत्ति को ग्रहण करता है तब स्पर्श करता है-
(क) संवर धर्म को (ख) श्रमण धर्म को
(ग) केवल ज्ञान को (घ) केवल दर्शन को (क)

(d) योग की प्रवृत्ति से उत्पन्न आत्मा के शुभाशुभ परिणाम कहलाते हैं-
(क) संज्ञा (ख) लेश्या
(ग) दृष्टि (घ) कषाय (ख)

(e) 'नवगैवेयक में किस सूत्र के अनुसार तीन दृष्टि पायी जाती है-
(क) जीवाजीवाभिगम सूत्र (ख) ठाणांग सूत्र
(ग) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (घ) उत्तराध्ययन सूत्र (क)

(f) भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषी और प्रथम-द्वितीय देवलोक की दण्डक की अपेक्षा से गति है-
(क) 02 (ख) 03
(ग) 05 (घ) 01 (ग)

(g) भौतिक वस्तुओं व सुखों में विशेष ममत्व होना कारण है-
(क) क्रोधोत्पत्ति (ख) मानोत्पत्ति
(ग) मायोत्पत्ति (घ) लोभोत्पत्ति (ख)

(h) अरिहंत प्ररूपित धर्म की श्रद्धा व आराधना से होने वाले फल का निर्देश वीरत्थुइ की किस गाथा में किया गया है-
(क) प्रथम (ख) द्वितीय
(ग) 26वीं (घ) 29वीं (घ)

(i) आयताकार पर्वतों में श्रेष्ठ है-
(क) रुचक (ख) निषध
(ग) सुमेरू (घ) स्तनित (ख)

(j) जघन्य आराधना वाला भी चार अनुत्तर विमान में जा सकता है, यह तथ्य पुष्ट करने वाला आगम है-
(क) सुखविपाक (ख) पन्नवणा
(ग) भगवती (घ) औपपातिक सूत्र (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) अग्नि, नमक आदि शस्त्रों से अचित्त बनी हुई के अतिरिक्त शेष वनस्पति अचित्त मानी गई है। (नहीं)

(b) 'किलिंचेण वा' का अर्थ 'खपाटी' से है। (हाँ)

(c) कर्मबंध के कारणभूत हिंसा, झूठ आदि आश्रवों को साधक रति भाव द्वारा रोक देता है। (नहीं)

(d) जीव के सामान्य विशेषात्मक बोधरूप व्यापार को योग कहते हैं। (नहीं)

(e) पाँचवी नरक के नेरिये की स्थिति जघन्य 10 सागरोपम उत्कृष्ट 17 सागरोपम है। (हाँ)

(f) असन्नी मनुष्य में एक दर्शन होता है। (नहीं)

(g) 'मान विनय गुण को नष्ट करता है।' यह भाव उत्तराध्ययन सूत्र में फरमाया है। (नहीं)

(h) 'वीरत्थुइ' सूत्रकृतांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध के छठे अध्ययन से ली गई है। (हाँ)

(i) 'अपगंडसुक्कं' का अर्थ 'जल के फेन के समान शुक्ल' है। (हाँ)

(j) जहाँ उत्कृष्ट चारित्राराधना होती है, वहाँ उत्कृष्ट दर्शनाराधना की नियमा है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **10x1 = (10)**

(a)	वायुकाय	(क) 1000 योजन	मण्डलवात
(b)	त्रस	(ख) यथाख्यात चारित्र	सम्मूर्च्छिम
(c)	अदत्तादान	(ग) मण्डलवात	अल्प
(d)	नारकी और देवों में योग	(घ) सम्मूर्च्छिम	11
(e)	जलचर उत्कृष्ट अवगाहना	(च) 5	1000 योजन
(f)	सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में समुद्घात	(छ) 11	5
(g)	संज्वलन क्रोध	(ज) वलयाकार	यथाख्यात चारित्र
(h)	रूचक	(झ) अल्प	वलयाकार
(i)	कषाय	(य) क्षीण वीतरागता	अध्यात्म दोष
(j)	चारित्राराधना	(र) अध्यात्म दोष	क्षीण वीतरागता

प्र.4 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a)	मैं थैली से उत्पन्न होने वाला त्रस जीव हूँ।	पोतज
(b)	मैं अधर्म का द्वितीय द्वार हूँ।	मृषावाद
(c)	मैं ज्ञानपूर्वक होने पर ही लाभकारी हूँ।	चारित्र
(d)	मेरे द्वारा जीव शब्दादि विषयों को जानता है।	इन्द्रिय
(e)	मेरी उत्कृष्ट स्थिति 22 हजार वर्ष है।	पृथ्वीकाय
(f)	मुझमें एक मात्र समचौरस संस्थान ही पाता है।	देवों/युगलिक मनुष्यों में
(g)	मैं सन्तोष के विचार जागृत करने पर ही मिल सकता हूँ।	सुख
(h)	मेरे सबसे ऊपर पण्डक वन है।	सुमेरु पर्वत
(i)	मैं पक्षियों में सबसे श्रेष्ठ हूँ।	वेणुदेव गरुड़
(j)	मेरे रहते हुए जीव सात बोलों का बंध नहीं करता है।	सम्यक्त्व अवस्था

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए: - **12x2 = (24)**

(a) सव्वभूयप्पभूयस्स, समं भूयाइं पासओ।
पिहियासव्वस्स दंतस्स, पावकम्मं न बंधइ।। गाथा का भावार्थ लिखिए।

उ. भावार्थ- जो संसार के सब जीवों को अपने समान समझता है और यह मानता है कि जैसे मेरे पैर में काँटा लगने से वेदना होती है, वैसे ही अन्य जीवों को भी पीड़ा होती है।इस प्रकार जीव-मात्र को आत्मवत् देखता है। फिर कर्मबन्ध के कारणभूत हिंसा, झूठ आदि आश्रवों को विरति भाव के द्वारा रोक देता है तथा शब्द, रूप-स्पर्श आदि इन्द्रिय के विषयों में जो राग नहीं करता है, जिसकी मानसिक वृत्तियाँ भी नियन्त्रित हैं, उस साधु को पाप-कर्म का बन्ध नहीं होता।

(b) छठे व्रत में साधक क्या प्रतिज्ञा करता है ?

उ. मैं सब प्रकार के रात्रि-भोजन का प्रत्याख्यान करता हूँ। अशन, पान, खाद्य और स्वाद्य इनमें से

किसी भी वस्तु का मैं स्वयं रात्रि में उपयोग नहीं करूँगा, दूसरों को भी नहीं खिलाऊँगा और रात्रि में खाने वाले का अनुमोदन भी नहीं करूँगा।

(c) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए-

उ. रूढपइट्ठेसु अंकुरित हुई वनस्पति पर रखे आसनादि पर
लहित्तु प्राप्त कर
पिहुणेण मोर-पंख से
सयं स्वयं

(d) पाँच स्थावर और असन्नी मनुष्य की अवगाहना लिखिए।

उ. चार स्थावर (वनस्पतिकाय वर्ज कर) और असन्नी मनुष्य, इनकी अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवें भाग। किन्तु जघन्य से उत्कृष्ट असंख्यात गुणा है। वनस्पतिकाय की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग, उत्कृष्ट 1000 योजन झाझेरी, कमलनाल की अपेक्षा से।

(e) नारकी और देवों में उपयोग लिखिए।

उ. नारकी और देवों में नवग्रैवेयक तक उपयोग पावे नौ- 3 ज्ञान, 3 अज्ञान और 3 दर्शन। पाँच अनुत्तर विमान में उपयोग पावे छः - तीन ज्ञान और तीन दर्शन। 15 परमाधामी, 3 किल्विषी में उपयोग पावे छः - 3 अज्ञान और तीन दर्शन।

(f) विकलेन्द्रिय और असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय में प्राण लिखिए।

उ. बेइन्द्रिय में प्राण पावे छह- रसनेन्द्रिय बल प्राण, स्पर्शनेन्द्रिय बल, वचनबल, कायबल, श्वासोच्छ्वास बल और आयुष्य बल प्राण। तेइन्द्रिय में प्राण पावे सात- उपर्युक्त छह एवं घ्राणेन्द्रिय बल प्राण। चौरेन्द्रिय में प्राण पावे आठ- उपर्युक्त सात व चक्षुरिन्द्रिय बल प्राण। असन्नी तिर्यच पंचेन्द्रिय में प्राण पावे नव- उपर्युक्त आठ व श्रोत्रेन्द्रिय बल प्राण।

(g) मान उत्पत्ति के कोई दो कारण लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई दो कारण-

1. धन, कुटुम्ब, रूप, बल, बुद्धि आदि की प्राप्ति होने पर व्यक्ति का अपने आपको दूसरों से श्रेष्ठ समझना।
2. उपर्युक्त परिस्थितियों में अपने से ऊँचे और बड़े गुणवानों के प्रति श्रद्धा व आदर का भाव न होना।
3. दूसरे के द्वारा अपनी प्रशंसा सुनकर अपने को महान् समझने की प्रवृत्ति होना।
4. भौतिक वस्तुओं व सुखों में विशेष ममत्व होना।
5. दूसरों को अपने से तुच्छ समझना।
6. पूर्व संचित मान मोहनीय नामक कर्म प्रकृति का उदय होना।
7. अनुकूल परिस्थितियों के हमेशा बनी रहने का मिथ्या भुलावा होना।

(h) मित्रता जीवन के लिए क्यों आवश्यक है ?

उ. मित्र के सामने सभी सुख दुःख प्रकट किए जा सकते हैं। मित्र बुरे दिनों में मदद भी करता है एवं बुराई से बचाता भी है। अतः जीवन में मैत्री-भावना आवश्यक है।

(i) लोभ को जीतने के कोई दो उपाय लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई दो उपाय-

1. धन या भौतिक पदार्थ ही सुख के कारण नहीं हैं। क्या सौ रूपये वालों से लाख रूपये वाले हजार

गुने सुखी हैं? सुख आखिर संतोष के विचार जागृत करने पर ही मिल सकता है। इसका गहराई से नित्य प्रति चिन्तन-मनन करते रहना चाहिये।

2. मुझे ज्यादा धन वाले सुखी लगते हैं, पर वस्तुतः यह सही नहीं है, यह मेरे अज्ञान का फल है। वास्तविक सुखी तो विचारों में सन्तोष की मात्रा बढ़ाने से ही हो सकूँगा।

3. समाज में इज्जत या नामबरी भी मात्र पैसे से नहीं हो सकती। सच्ची इज्जत तो क्षमा, परोपकार, सरलता आदि सद्‌गुणों से ही होती है।

4. हमेशा अपने से धन में नीचे वालों की तरफ देखते रहना चाहिए।

5. इस लोक में भी जब धन के लिए चोरी करने वाले पकड़े जाते हैं, तब जेल की सजा व यातना स्वयं भुगतते हैं। कोई अन्य हिस्सा नहीं बँटाता तो परलोक में नरक, तिर्य्‌च आदि दुर्गतियों में दुःख भोगते समय कौन रक्षा कर सकेगा?

6. अनित्य, अशरण, संसार और एकत्व इन चार भावनाओं का गहराई से, शान्त चित्त से नित्य चिन्तन करना चाहिये।

(j) दाणाण.....नायपुत्ते।। गाथा को पूर्ण कीजिए।

उ. दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति।
तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते।।

(k) निम्नलिखित अर्थ वाले प्राकृत शब्द लिखिए-

उ.

योद्धाओं में -	जोहेसु।	स्थित-	ठियस्स।
अनुभव करते हैं-	वेदयंती।	संग्रह/संचय-	सण्णिहिं।

(l) सुदंसणस्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चइ महतो पव्वयस्स।
एतोवमे समणे नायपुत्ते, जाइ-जसो-दंसण-नाणसीले। गाथा का भावार्थ लिखिए।

उ. उस महान् पर्वत सुदर्शन का यश पूर्वोक्त प्रकार से कहा जाता है, भगवान् महावीर भी उसी प्रकार जाति, यश, दर्शन, ज्ञान एवं शील में अनेक गुणों से युक्त सर्वश्रेष्ठ हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **12x3=(36)**

(a) पच्छावि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमरभवणाइं।
जेसिं पिओ तवो संजमो य, खंती य बंभचेरं य।। गाथा का भावार्थ लिखिए।

उ. पिछली अवस्था में दीक्षा ग्रहण करके भी वे साधक शीघ्र स्वर्गलोक को प्राप्त करते हैं, जिनको तप, संयम, क्षमा और ब्रह्मचर्य के सद्‌गुण प्रिय हैं। साधना के फलस्वरूप वे साधक देवगति के सुफल प्राप्त करते हैं।

(b) तवो गुण.....तारिसगस्स।। रिक्त स्थान की पूर्ति करके भावार्थ लिखिए।

उ. तवोगुणपहाणस्स उज्जुमइ, खंतिसंजमरयस्स।
परीसहे जिणंतस्स 'सुलहा सुगई' तारिसगस्स।।
भावार्थ- जो तप-गुण की प्रधानता वाला है, सदा बाह्य एवं आभ्यन्तर तप करता रहता है, सरल मति वाला, क्षमा एवं 17 प्रकार के संयम में रमण करता है, भूख-प्यास आदि परीषहों को जीतने वाला है, कष्ट आने पर कभी घबराता नहीं है, वैसे साधक की सुगति सुलभ होती है।

(c) कैसे साधु की सुगति दुर्लभ होती है ? कोई तीन विशेषताएँ लिखिए।

उ. जो साधु सुख की इच्छा वाला है, साता-सुख के लिये जो मन की अधीरता के कारण आकुल रहता है, समय से अधिक सोता है और मुलायम बिस्तर पर आराम से सोना चाहता है, बार-बार हाथ-पैर

धोता एवं पानी का विशेष उपयोग करता है, उसकी सुगति दुर्लभ होती है।

(d) निम्न अर्थ वाले प्राकृत शब्द लिखिए-

उ.

1. कभी विराधना न करे	ण विराहिज्जासि
2. प्राप्त कर लेता है	गच्छइ
3. सर्वश्रेष्ठ	अणुत्तरं
4. जब	जया
5. ओला	करगं
6. जंगल में	रण्णे

(e) गर्भज मनुष्य की उत्कृष्ट अवगाहना लिखिए।

उ.

पहले आरे के आरम्भ में	तीन गाउ
पहला पूर्ण होते और दूसरे के आरम्भ में	दो गाउ
दूसरा पूर्ण होते और तीसरे के आरम्भ में	एक गाउ
तीसरा पूर्ण होते और चौथे के आरम्भ में	पाँच सौ धनुष
चौथ उतरते और पाँचवाँ लगते	सात हाथ
पाँचवाँ उतरते और छठा लगते	दो हाथ

(f) तीन विकलेन्द्रिय तथा पाँच असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की स्थिति लिखिए।

उ. स्थिति- सभी की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट बेइन्द्रिय की 12 वर्ष, तेइन्द्रिय की 49 अहोरात्रि, चौरेन्द्रिय की 6 माह की। असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पाँच भेद-जलचर, स्थलचर, खेचर, उरपरिसर्प और भुजपरिसर्प। इन पाँचों की स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट जलचर की 1 करोड़ पूर्व, स्थलचर की 84 हजार वर्ष, खेचर की 72 हजार वर्ष, उरपरिसर्प की 53 हजार वर्ष और भुजपरिसर्प की 42 हजार वर्ष की।

(g) युगलिक मनुष्य की अवगाहना लिखिए।

उ. हेमवत और ऐरण्यवत में एक गाउ। हरिवास और रम्यक्वास में दो गाउ। देवकुरु और उत्तरकुरु में तीन गाउ। अन्तद्वीप में आठ सौ धनुष। जघन्य देशऊणी और उत्कृष्ट परिपूर्ण होती है।

(h) पाँच स्थावर तथा असन्नी मनुष्य में लेश्या लिखिए।

उ. पृथ्वीकाय, अप्काय और वनस्पतिकाय, इन तीनों के बादर (प्रत्येक) के अपर्याप्त में लेश्या पावे चार- कृष्ण लेश्या, नील लेश्या, कापोत लेश्या और तेजो लेश्या। शेष सभी एकेन्द्रिय और असन्नी मनुष्य में लेश्या पावे तीन-कृष्ण लेश्या, नील लेश्या और कापोत लेश्या।

(i) से सव्वदंसी.....अणाऊ।। गाथा को पूर्ण करते हुए उसका भावार्थ लिखिए-

उ. से सव्वदंसी अभिभूय नाणी, णिरामगंधे धिइमं ठियप्पा।
अणुत्तरे सव्वजगंसि विज्जं, गंथा अतीते अभए अणाऊ।।
भावार्थ- वे प्रभु महावीर सर्वदर्शी एवं अभिभूत ज्ञानी (केवलज्ञानी) थे। वे शुद्ध चारित्र का पालन करने में धैर्यवान थे और आत्मस्वरूप में स्थित आत्मा थे। सम्पूर्ण जगत में श्रेष्ठ विद्वान थे। बाह्य आभ्यन्तर परिग्रह रूप ग्रन्थियों से रहित एवं निर्भय तथा आयु रहित अर्थात् जन्म-मरण से रहित थे।

(j) किरियाकिरियं.....संजमदीहरायं।। गाथा को पूर्ण करते हुए उसका भावार्थ लिखिए-

उ. किरियाकिरियं वेणइयाणुवायं, अण्णाणियाणं पडियच्च ठाणं।
से सव्ववायं इइ वेयइत्ता, उवट्ठिए संजमदीहरायं।।
भावार्थ- क्रियावादी, अक्रियावादी, विनयवादी तथा अज्ञानवादी इन सभी मतवादियों के मतों को

जानकर भगवान् यावज्जीवन संयम में स्थित रहे थे।

(k) एक बार आराधक बना हुआ साधक 15 भवों तक लगातार आराधक ही बना रहे, यह आवश्यक नहीं। उक्त तथ्य को सिद्ध करने हेतु कोई दो प्रमाण दीजिए।

उ. नोटः इनमें से कोई एक-

1. सुख विपाक सूत्र में सुबाहु कुमार के वर्णन में उल्लेख है कि उन्होंने सर्वार्थ सिद्ध विमान से आने के बाद मनुष्य भव में केवल बोधि (सम्यग्दर्शन) को प्राप्त किया। अर्थात् मनुष्य भव में मिथ्यात्वी से सम्यक्त्वी बने।

2. पन्नवणा सूत्र के 15वें इन्द्रिय पद में वर्णन है कि चार अनुत्तर विमान से आया हुआ जीव 8-16-24 यावत् संख्याता द्रव्येन्द्रियाँ कर सकता है। 16 द्रव्येन्द्रियाँ तभी घटित होती हैं जबकि अनुत्तर विमान से आकर मनुष्य भव में पुनः मनुष्यायु का बन्ध करे। मनुष्य भव में मनुष्यायु का बन्ध मिथ्यात्व अवस्था में ही सम्भव है।

3. तीर्थंकर चरित्र में भगवान ऋषभदेव के 13 भवों के वर्णन में उल्लेख मिलता है कि वे छठे भव में मनुष्य थे तथा सातवें भव में युगलिक मनुष्य बने। मनुष्य से मरकर युगलिक मनुष्य बनना भी तभी सम्भव है जबकि मिथ्यात्व अवस्था में आयुष्य बन्ध हुआ हो।

(l) तीन प्रकार की आराधनाओं में कौनसी आराधना प्रमुख है ? क्यों ? श्रुत परम्परा से आराधक किसे माना गया है ?

उ. तीनों प्रकार की आराधनाओं में दर्शन आराधना प्रमुख व प्राथमिक है। क्योंकि दर्शन आराधना होने पर ही निश्चय में ज्ञान व चारित्र की आराधना संभव हो पाती है। आराधक का अर्थ ही श्रुत परम्परा से ऐसा सुनने में आता है कि जिसका सम्यक्त्व अवस्था में अगले भव का आयुष्य बन्ध हुआ हो, उसे ही आराधक मानना चाहिये। सम्यक्त्व आदि मृत्यु के समय होने पर उसका आराधक होना आवश्यक नही है। आयुष्य बन्ध के समय होने पर ही उसे आराधक कहा जा सकता है। क्योंकि आराधक होने पर वह जीव अधिकतम 15 भव करता है और वे 15 भव भी सात वैमानिक देव-सम्बन्धी तथा आठ मनुष्य-सम्बन्धी होते हैं।

कक्षा : आठवीं – जैन धर्म भूषण (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'रूयं' का अर्थ है-
(क) किन्ही (ख) शब्द करना
(ग) आगे जाना (घ) पीछे जाना (ख)

(b) वर्तमान की साधना में भूतकाल की स्मृति चंचलता उत्पन्न न करें, इस दृष्टि से साधक किस महाव्रत में पूर्वभुक्त भोगों के लिए प्रतिक्रमण करता है-
(क) प्रथम (ख) द्वितीय
(ग) तृतीय (घ) चतुर्थ (घ)

(c) मुख्य रूप से त्रस जीव के प्रकार होते हैं -
(क) 8 (ख) 06
(ग) 03 (घ) 04 (क)

(d) किस सूत्र की प्रथम प्रतिपत्ति में प्राण और योग ये दो अंतिम द्वार नहीं है-
(क) आचारांग (ख) जीवाभिगम
(ग) दशवैकालिक (घ) जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (ख)

(e) युगलिक मनुष्य में लेश्या पाई जाती हैं -
(क) 01 (ख) 03
(ग) 04 (घ) 02 (ग)

(f) वायुकाय में समुद्घात नहीं पाई जाती है-
(क) वैक्रिय (ख) कषाय
(ग) वेदनीय (घ) तैजस (घ)

(g) 'जीवन की क्षणभंगुरता' का चिन्तन, उपाय है -
(क) क्रोधविजय का (ख) मानविजय का
(ग) मायाविजय का (घ) लोभविजय का (ख)

(h) 'वीरत्थुइ' की किस गाथा में जिज्ञासा का विषय इंगित किया गया है -
(क) चौथी (ख) दूसरी
(ग) पाँचवी (घ) सातवीं (ख)

(i) 'वेणुदेव' है -
(क) हाथी (ख) सिंह
(ग) गरुड़ (घ) पर्वत (ग)

(j) भगवान ऋषभदेव अपने छठे भव में थे-
(क) मनुष्य (ख) युगलिक मनुष्य
(ग) देव (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) न निसीआविज्जा का अर्थ 'बिठावे नहीं' है। (हाँ)
(b) अंगार के सूक्ष्म कण में असंख्य जीव नहीं है। (नहीं)
(c) आघात, टकराहट और अग्नि आदि शस्त्रों से वायु सचित्त होती है। (नहीं)
(d) नारकी और देवों में नवग्रैवेयक तक 6 उपयोग पाते हैं। (नहीं)
(e) वनस्पतिकाय की उत्कृष्ट अवगाहना 10000 योजन झाझेरी है। (नहीं)
(f) चौरेन्द्रिय में 6 उपयोग पाते हैं। (हाँ)
(g) दशवैकालिक सूत्र में फरमाया कि क्रोध का त्याग करने से जीव क्षमाभाव को प्राप्त करता है। (नहीं)
(h) सूत्रकृतांग सूत्र उत्कालिक होने से इसका स्वाध्याय दिनरात्रि के अंतिम

प्रहर में करना चाहिए। (नहीं)

(i) वीरत्थुइ में भगवान ने अध्यात्म के चार दोष बताये हैं। (हाँ)

(j) उत्कृष्ट दर्शनाराधना का फल क्षायिक सम्यक्त्व है। (हाँ)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मेरे अभाव में साधक प्रत्येक क्रिया में पाप कर्म का बंध करता है। यतना

(b) मुझसे साधक भोगों की असारता को समझकर देव और मनुष्य भव के भोगों से विरक्त हो जाता है। ज्ञान

(c) मुझको खुला रखने से अन्य पाप भी आसानी से प्रविष्ट होते रहते हैं। मृषावाद

(d) मेरे सेवन से शरीर पुष्ट होता है। आहार

(e) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 33 सागरोपम की है। 7वीं नारकी/चार अनु.विमान/ सर्वार्थसिद्ध

(f) मुझमें छह संहननों में से एक मात्र वज्रऋषभनाराच संहनन ही पाता है। युगलिक मनुष्य

(g) मुझ पर विजय प्राप्त करने से विनय गुण की प्राप्ति होती है। मान

(h) मेरे तीन काण्ड या विभाग है। सुमेरू पर्वत

(i) मैं आयताकार पर्वतों में श्रेष्ठ हूँ। निषध

(j) मेरी गति जघन्य प्रथम देवलोक बतलायी है। आराधक संयमी साधु/संयमासंयमी श्रावक

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2 = (28)**

(a) जया जोगे निरुंभित्ता, सेलेसिं पडिवज्जइ।

उ. तया कम्मं खवित्ताणं, सिद्धिं गच्छइ नीरओ।। गाथा का भावार्थ लिखिए।
जब जीवन का अन्तर्मुहूर्त्त काल शेष रहता है, तब केवल योगी का निरोध करते हुए, सर्वप्रथम मनोयोग का निरोध करते है, फिर वचनयोग और काययोग का निरोध करते हैं, श्वासोच्छ्वास का निरोध करते हैं और पाँच ह्रस्व अक्षरों के उच्चारण काल में चारों अघाती कर्मों कर भी क्षय कर देते हैं। इस तरह आठों ही कर्म क्षय करके, सर्वथा कर्म रज रहित होकर, सिद्ध गति को प्राप्त करते हैं।

(b) त्रस जीव के कोई दो प्रकार लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई दो-
1. अण्डज, 2. पोतज, 3. जरायुज, 4. रसज, 5. स्वेदज 6. सम्मूर्च्छिम, 7. उद्‌भिज, 8. औपपातिक

(c) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए।

उ. एसो- यह रण्णे- अरण्य (जंगल)
चेलेण- वस्त्र उज्जुमइ- सरल मति

(d) नारकी और देवों में कितने व कौन-कौन से योग पाये जाते हैं ?

उ. नारकी और देवों में ग्यारह योग पाये जाते हैं- 4 मन के, 4 वचन के और 3 काया के।

(e) असन्नी मनुष्य की गति-आगति लघुदण्डक के आधार से लिखिए।

उ. असन्नी मनुष्य दो गति से आवे- तिर्यच गति और मनुष्य गति से। दो गति में जावे- तिर्यच गति और मनुष्य गति में। दण्डक की अपेक्षा आठ दण्डक से आवे।

(f) सिद्ध भगवान की अवगाहना लिखिए।

उ. आत्म प्रदेशों की अवगाहना जघन्य एक हाथ आठ अंगुल, मध्यम चार हाथ सोलह अंगुल और उत्कृष्ट 333 धनुष-32 अंगुल।

(g) माया-विजय के कोई दो उपाय लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई दो-
1. व्यवहार में दूसरों को ठगना निश्चय में अपने आपको ठगना है, ऐसा विचार बार-बार करते रहना चाहिए।
2. सच्चाई और सरलता मानव जीवन का सार है, यह समझकर जीवन में इसका आचरण करना

चाहिए।

3. छिपकर किये गये पाप सर्वज्ञ तो जानते ही हैं, प्रकृति भी उसका बदला लेती है, यह सोचकर माया के पापों से बचना चाहिए।

4. प्रतिदिन शाम को दिनभर में की गयी प्रवृत्तियों में कहाँ-कहाँ, कितनी-कितनी माया, दिखावा, ठगाई, प्रवंचना आदि का सेवन किया, उसको याद कर भविष्य में ऐसा न करने का दृढ़ संकल्प करना चाहिये।

(h) अनन्तानुबन्धी क्रोध को स्पष्ट कीजिए।

उ. यह क्रोध जीवनपर्यन्त अर्थात् मिथ्यात्व के उदय रहने तक रहता है। यह सम्यक्त्व गुण का घात करता है तथा इसमें मरने वाला नरक गति का अधिकारी बनता है। अनन्त संसार का बन्ध कराने के कारण इसका नाम अनन्तानुबन्धी रखा गया है।

(i) महीइ .....अच्चिमाली।।गाथा को पूर्ण करके लिखिए।

उ. महीइ मज्झम्मि ठिए णगिंदे, पन्नायए सूरिए सुद्धलेसे।
एवं सिरीए उ स भूरिवन्ने, मणोरमे जोयइ अच्चिमाली।।

(j) से वारिया.....सव्ववारं।। गाथा को पूर्ण कीजिए।

उ. से वारिया इत्थि सराइभत्तं, उवहाणवं दुक्ख खयट्ठयाए।

उ. लोगं विदित्ता आरं परं च, सव्व पभू वारिया सव्ववारं।।

(k) निम्न अर्थ वाले प्राकृत शब्द लिखिए।

उ. मनुष्य- जणा वमन करने वाला- वंता
जहाँ- जंसी सौ- सयं

(l) निम्न गाथा का भावार्थ लिखिए।
जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे, नागेसु वा धरणिदंमाहु सेट्ठे।
खोओदए वा रसवेजयंते, तवोवहाणे मुणि वेजयंते।

उ. जैसे सब समुद्रों में स्वयम्भूरमण समुद्र प्रधान है तथा नागकुमार देवों में धरणेन्द्र सर्वोत्तम हैं,जैसे सब रसों में इक्षुरसोदक समुद्र श्रेष्ठ है, उसी तरह सब तपस्वियों में श्रमण भगवान् महावीर स्वामी श्रेष्ठ है।

(m) मध्यम ज्ञान-दर्शन और चारित्र की आराधना वाले जीवों के भव लिखिए।

उ. मध्यम ज्ञान-दर्शन और चारित्र की आराधना वाले जीव जघन्य दो भव ग्रहण करके उत्कृष्टतः तीसरे भव में अवश्य मोक्ष में जाते हैं अर्थात् दो भव वैमानिक के तथा तथा तीन भव मनुष्य के, इस प्रकार कुल 5 भव करके तो वह जीव मोक्ष में जाता ही है।

(n) दर्शनाराधना का स्वरूप समझाइए।

उ. शंका, कांक्षा आदि अतिचारों को न लगाते हुए निःशंकित निष्कांक्षित आदि आठ दर्शनाचारों का शुद्धतापूर्वक पालन करते हुए दर्शन अर्थात् सम्यक्त्व की आराधना करना 'दर्शनाराधना' है।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **14x3=(42)**

(a) सुहसायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स।
उच्छोलणापहोयस्स, दुल्लहा सुगइ तारिसगस्स।। गाथा का भावार्थ लिखिए।

उ. जो साधु सुख की इच्छा वाला है, साता-सुख के लिये जो मन की अधीरता के कारण आकुल रहता है, समय से अधिक सोता है और मुलायम बिस्तर पर आराम से सोना चाहता है, बार-बार हाथ-पैर धोता एवं पानी का विशेष उपयोग करता है, उसकी सुगति दुर्लभ होती है।

(b) रिक्त स्थान की पूर्ति करके भावार्थ लिखिए-

उ. जया संवरमुक्किट्ठं, धम्म फासे अणुत्तरं।
तया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलसुं कडं।।
भावार्थ- जब साधक उत्कृष्ट संवर-धर्म को प्राप्त कर लेता है, तब कर्मों की रज को धुनकर अलग कर देता है-यानी नष्ट कर देता है।

(c) क्रिया अर्थात् आचरण से पहले ज्ञान क्यों आवश्यक है ? समझाइए।

उ. चारित्र ज्ञानपूर्वक होने पर ही लाभकारी होता है, इसलिये कहा है कि पहले ज्ञान और फिर दया। वास्तविक ज्ञान के अभाव में कितने ही लोग देवों की बलि देने में धर्म मानते हैं। कुछ सूक्ष्म जीवों की हिंसा में पाप नहीं मानते। इस प्रकार बिना ज्ञान के हित-अहित का बोध कैसे होगा? इसलिये क्रिया आचरण से पहले ज्ञान आवश्यक है।

(d) निम्न अर्थ वाले प्राकृत शब्द लिखिए।

उ.

जानता हुआ	वियाणंतो
मैथुन को	मेहुणं
हिंसा करता है	हिंसइ
आभ्यन्तर	सब्भिंतरं
स्वर्गलोक को	अमर भवणाइं
तब	तया

(e) पाँचवें महाव्रत में जैन मुनि क्या प्रतिज्ञा करते हैं ?

उ. पाँचवें महाव्रत में जैन मुनि प्रतिज्ञा करते हैं- मैं मन, वचन, काया से थोड़ा या बहुत, छोटा या बड़ा, सचित्त या अचित्त किसी भी प्रकार का परिग्रह रखूँगा नहीं, रखाऊँगा नहीं और परिग्रह रखने वाले का भला भी मानूँगा नहीं। पूर्व में जो परिग्रह किया है, उसके लिये प्रतिक्रमण करता हूँ, निन्दा करता हूँ, गुरु साक्षी से गर्हा करता हूँ और उस पूर्व की पापकारी आत्मा का व्युत्सर्ग करता हूँ।

(f) पाँच स्थावर तथा असन्नी मनुष्य में अवगाहना द्वार लिखिए।

उ. पाँच स्थावर तथा असन्नी मनुष्य में अवगाहना- जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग और उत्कृष्ट भी अंगुल के असंख्यातवें भाग, किन्तु जघन्य से उत्कृष्ट असंख्यात गुणा है।

(g) तीन विकलेन्द्रिय तथा असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में प्राण द्वार लिखिए।

उ. बेइन्द्रिय में प्राण पावे छह- रसनेन्द्रिय बल प्राण, स्पर्शनेन्द्रिय बल, वचनबल, कायबल, श्वोसोच्छ्वास बल और आयुष्य बल। तेइन्द्रिय में प्राण पावे सात-उपर्युक्त छह एवं घ्राणेन्द्रिय बल प्राण। चौरेन्द्रिय में प्राण पावे आठ-उपर्युक्त सात एवं चक्षुरिन्द्रिय बल प्राण।
असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में प्राण पावे नव- उपर्युक्त आठ एवं श्रोत्रेन्द्रिय बल प्राण।

(h) गर्भज मनुष्य में स्थिति द्वार लिखिए।

उ. जघन्य अन्तर्मुहूत्त, उत्कृष्ट तीन पल्योपम। काल की अपेक्षा अवसर्पिणी काल-

पहले आरे के प्रारम्भ में-	3 पल्योपम
पहला उतरते और दूसरा लगते-	2 पल्योपम
दूसरा उतरते और तीसरा लगते-	1 पल्योपम
तीसरा उतरते और चौथा लगते-	1 करोड़ पूर्व
चौथा उतरते और पाँचवाँ लगते-	एक सौ वर्ष झाझेरी
पाँचवा उतरते और छठा लगते-	20 वर्ष
छठा आरा उतरते-	16 वर्ष

(i) युगलिक मनुष्य में गति-आगति लिखिए।

उ. आगति 2- तिर्यञ्च और मनुष्य से। गति- एक- देवगति में। दण्डक की अपेक्षा-तीस अकर्म भूमि की

आगति दो दण्डक से- मनुष्य और तिर्यच पंचेन्द्रिय से। गति- दण्डक 13 में- 10 भवनपति, 1 वाणव्यन्तर, 1 ज्योतिषी और 1 वैमानिक में।

छप्पन अन्तर्द्वीपों में आगति दण्डक 2 और गति दण्डक 11 में- 10 भवनपति और 1 वाणव्यन्तर में।

(j) मरण किसे कहते हैं ? भेद सहित स्पष्ट कीजिए।

उ. जीव एक भव को छोड़कर दूसरे भव को प्राप्त करे, उसे मरण कहते हैं। मरण के दो भेद हैं-

1.समोहया मरण- जिस मरण में जीव के प्रदेश ईलिका गति अर्थात् कीड़ी की कतार की तरह निकले, उसे समोहया मरण (मारणान्तिक समुद्घातपूर्वक मरण)कहते हैं।

असमोहया मरण- जिस मरण में गेंद (दड़ी) के उछलने अथवा बंदूक की गोली के समान जीव के प्रदेश एक साथ निकले, उसे असमोहया (बिना मारणान्तिक समुद्घात के मरण) मरण कहते हैं।

(k) लोभ-विजय के कोई तीन उपाय लिखिए।

उ. नोट- इनमें से कोई तीन-

1. धन या भौतिक पदार्थ ही सुख के कारण नहीं हैं। क्या सौ रूपये वालों से लाख रूपये वाले हजार गुने सुखी हैं?सुख आखिर संतोष के विचार जागृत करने पर ही मिल सकता है। इसका गहराई से नित्य प्रति चिन्तन-मनन करते रहना चाहिये।

2. मुझे ज्यादा धन वाले सुखी लगते हैं, पर वस्तुतः यह सही नहीं है, यह मेरे अज्ञान का फल है। वास्तविक सुखी तो विचारों में सन्तोष की मात्रा बढ़ाने से ही हो सकूँगा।

3. समाज में इज्जत या नामबरी भी मात्र पैसे से नहीं हो सकती। सच्ची इज्जत तो क्षमा, परोपकार, सरलता आदि सद्गुणों से ही होती है।

4. हमेशा अपने से धन में नीचे वालों की तरफ देखते रहना चाहिए।

5. इस लोक में भी जब धन के लिए चोरी करने वाले पकड़े जाते हैं, तब जेल की सजा व यातना स्वयं भुगतते हैं। कोई अन्य हिस्सा नहीं बँटाता तो परलोक में नरक, तिर्यंच आदि दुर्गतियों में दुःख भोगते समय कौन रक्षा कर सकेगा?

6.अनित्य, अशरण, संसार और एकत्व इन चार भावनाओं का गहराई से, शान्त चित्त से नित्य चिन्तन करना चाहिये।

(l) सोच्चा.....समायरे।।गाथा को पूर्ण कर भावार्थ लिखिए।

उ. सोच्चा जाणइ कल्लाणं, सोच्चा जाणइ पावगं।
उभयं पि जाणइ सोच्चा, जं सेयं तं समायरे।।

भावार्थ- ज्ञान प्राप्ति का मुख्य साधन सुनना है। पुण्य और पाप का ज्ञान शास्त्र सुनने से ही होता है। ज्ञानी शास्त्र सुनकर ही पुण्य-पाप का ज्ञान प्राप्त करता है और श्रेय मार्ग को स्वीकार करता है।

(m) से वीरिएणं.....णेगगुणोववेए।।गाथा को पूर्ण कर भावार्थ लिखिए।

उ. से वीरिएणं पडिपुन्नवीरिए, सुदंसणे वा णगसव्वसेट्ठे।
सुरालए वासि मुदागरे से, विरायए णेगगुणोववेए।।

भावार्थ-वे भगवान् महावीर वीर्यान्तराय कर्म के क्षय हो जाने से प्रतिपूर्ण वीर्य वाले हैं, जैसे समस्त पर्वतों में सुदर्शन मेरु श्रेष्ठ है उसी प्रकार भगवान् महावीर वीर्य आदि आत्मगुणों में सर्वश्रेष्ठ हैं। जैसे देवलोक अनेक प्रशस्त वर्ण-गंधादि गुणों से अपने निवासी देव-देवियों के लिये हर्षजनक है वैसे ही भगवान महावीर अनेक गुण युक्त होकर सभी प्राणियों के लिये हर्षजनक के रूप में विराजमान हैं।

(n) आराधना से सम्बन्धित कोई तीन तथ्य (फलित सिद्धान्त) लिखिए।

उ. नोट-इनमें से कोई तीन-

1. आराधना-अध्ययन (पढ़ाई) के समान उत्तीर्ण होने की तैयारी करना। आराधक-परीक्षा के समय उत्तीर्ण होकर उपाधि (डिग्री) प्राप्त करने के समान अर्थात् परिणाम के समान। आराधना की, किन्तु

परीक्षा (आयुष्य बन्ध) के समय सजगता नहीं रहे तो अनुत्तीर्ण (विराधक) हो जाता है।

2. ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना के आठ भव (मनुष्य सम्बन्धी) ही होते हैं। विराधना के तो अनेक भव हो सकते हैं। एक बार ज्ञान, दर्शन (सम्मिलित) की आराधना हो जाने पर भी उत्कृष्ट 15 भवों में मोक्ष की प्राप्ति निश्चित् है। प्रथम व अन्तिम भव में आराधक अवश्य होता है। बीच के भवों में विराधक भी हो सकते हैं, लेकिन 15 भवों से अधिक वह नहीं कर सकता है।

3. जघन्य आराधना वाला भी चार अनुत्तर विमान में जा सकता है। (पन्नवणा पद 15, उद्देशक 2 - 13 भव तक)

4. ज्ञान व दर्शन की उत्कृष्ट आराधना- चौथे, पाँचवें एवं छठे गुणस्थान में भी हो सकती है। (बकुश, प्रतिसेवना, कषाय कुशील नियंठा में)

5. चारित्र की उत्कृष्ट आराधना तो कषाय कुशील एवं निर्ग्रन्थ नियंठा में ही होने की सम्भावना है। (स्नातक नियंठा या क्षीण कषायी निर्ग्रन्थ नियंठा में तो चारित्र की आराधना का फल क्षायिक चारित्र होता ही है।

6. जिन्हें क्षपक श्रेणि करनी है, ऐसे छठे गुणस्थानवर्ती साधकों में ज्ञानादि तीनों प्रकार की उत्कृष्ट आराधना हो सकती है।

7. पुलाकादि तीन नियंठा में चारित्र की जघन्य व मध्यम आराधना होती है। कषाय कुशील एवं निर्ग्रन्थ में तीनों आराधना होती है। स्नातक में आराधना नहीं कह कर आराधना का फल (केवलज्ञान-केवलदर्शन) कहना चाहिए।

8. क्षपक श्रेणी में (आठवें आदि गुणस्थानों में) उत्कृष्ट चारित्राराधना की ही संभावना है। उपशम श्रेणि में (8 से 11 गुणस्थान) काल करने पर उत्कृष्ट चारित्राराधना की ही संभावना है। काल करके कल्पातीत (5 अनुत्तर विमान) देवों में ही उत्पन्न होते हैं। उपशम श्रेणि से गिरने पर भी जब तक आराधक रहे, तब तक उत्कृष्ट चारित्राराधना की ही संभावना है।